चतुर्थ अध्याय :

रामदेवधुरंधर के उपन्यासों में भारतीय संस्कृति एवं परिवेश बोध -

भारतीय संस्कृति की विस्तृत चर्चा मैंने तीसरे अध्याय में की है | फिर भी यहाँ पर भी थोड़ा विवेचन करूँगा |

'मॉरीशस' मास्कोरोने द्वीप समूह का हिस्सा है। भौगोलिक रूप से अफ्रीका महाद्वीप के समुद्री तट से दक्षिण पूर्व में लगभग ६०० किमी दूर हिंद महासागर के तट पर मॉरीशस द्वीप स्थित है। मॉरीशस द्वीप का नाम राजकुमार 'मॉरिव एव नासो" के नाम पर रखा गया था। मॉरीशस को खजानों का द्वीप (ट्रेजर आइलैण्ड) कहा जाता है। मॉरीशस में पुर्तगालियों से लेकर फ्रांसीसी, अंग्रेजों का शासन था, अतः वहाँ की संस्कति में विविधता दिखाई देती है। मॉरीशस में भारतीयों का आगमन ई. सन् १८३४ में गिरमिटिया मजदूरों के रूप में हुआ था। गवर्नर फारकूहार ने इसके पूर्व ई. सन् १८१६ में भारतीय कैदियों को सड़क निर्माण के लिए ले जाया गया था। मुख्यतः उस समय में भारतीयों को दास बनाने के उद्देश्य से ही देश-विदेशों में भेजा जाता था। दास प्रथा का उल्लेख करते हुए प्रहलाद रामशरण ने लिखा है- "अंग्रेजों का शासन भारत और मॉरीशस दोनों में था। इसलिए अंग्रेजों को भारतीय मजदूरों की परिश्रमशीलता मालूम थी। अतः उन्होंने योजनाबद्ध रीति से भारतीय मजदूरों को मंगाने का निश्चय किया। यह खेद की बात थी जहाँ एक ओर दास प्रथा का अंत किया गया था, वहाँ दूसरी और भारतीय मजदूरों को अर्धदास बनाकर उपनिवेशों में भेजे जाने की अनूठी योजना किया अंग्रेजों ने क्रूरता की सारी हदें पार कर दी थी इतने अत्याचारों के बावजूद बनी थी।" 1 भारतीय मजदूरों को प्रताड़ित किया और महिलाओं का शारीरिक शोषण किया अंग्रेजों ने क्रूरता की सभी हदें पार कर दी थी इतने अत्याचारों के बावजूद भारतीय मजदूरों का हौसला नहीं खत्म हुआ |

भारतीयों को मॉरीशस में गन्ने की खेती करने हेतु गिरमिटिया मजदूर के रूप में लाए गए थे। इसके अतिरिक्त कुली, सड़क निर्माण, सेठ साहूकारों के यहाँ कामकाज भी करवाया गया था। गोरों ने भारतीयों को बेहतर जीवन देने की लालसा देकर भारतीयों को मॉरीशस में गन्ने की खेती करने हेतु गिरमिटिया मजदूर के रूप मॉरीशस भेज दिया। इतनी कष्टदायक परिस्थितियों के चलते एक शती में लगभग ४,५०,०००

भारतीय मजदूर मॉरीशस पहुँचे। अंग्रेजों ने भौतिक सुविधाओं के नाम पर भोले-भाले भारतीयों के साथ छल किया। प्राथमिक सुविधाओं के नाम पर टाट की बनी झुग्गियों में एक साथ कई सारे मजदूरों को भर दिया जाता था, आवास, भोजन, रोजगार तक मुहैया नहीं कराया गया। ऐसी त्रासदी में भारतीय मजदूर अपनी जीवन यापन कर रहे थे, असहनीय पीड़ा में वे अपनी लोक संस्कृति की ओर मुड़े और अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को प्रगाढ़ बनाया। कहते हैं मनुष्य पीड़ा में अपने दु:ख-दर्द के निवारण हेतु ईश्वर को याद करता है और अपनी अंतरात्मा को नयी अभिव्यक्ति प्रदान करता है। इसी नयी उम्मीद के साथ धार्मिक रूप से अपनी संस्कृति से जुड़ गये और रामायण, हनुमान चालीसा, महाभारत आदि का पाठ करने लगे, धीरे-धीरे माता के जगराते होने लगे और भारतीय संस्कृति अपनी जड़े जमाने लगी।

भारत के विभिन्न प्रांत बिहार, पंजाब, उत्तर प्रेदश आदि के गिरमिटिया मजदूर पलायन कर मॉरीशस गये किन्तु साथ ही अपनी संस्कृति, अपना लोकसाहित्य भी ले गये। अपने देश की मिट्टी की महक उनकी रंगों में है और वह लोक संस्कारों के रूप में मॉरीशस की धरती पर सांस ले रही है। भारत की भाँति मॉरीशस भी बहु- सांस्कृतिक देश है। यहाँ फ्रांसीसी, अंग्रेज, अफ्रीकी, चीनी आदि भाषाएँ बोली व व्यवहार में लायी जाती हैं। साथ ही हिन्दी भाषा का भी वर्चस्व है। भारत की राजभाषा हिंदी है लेकिन मॉरीशस की लोकप्रिय भाषा हिंदी है। मॉरीशस से हिंदू बहुल मात्रा में निवास करते हैं। भारत से उत्तर और दक्षिण भारत के गिरमिटिया मजदूर को लाया गया था, दक्षिण भारत महाराष्ट्र, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश के मजदूर मॉरीशस गये थे। भारतीय मजदूरों ने सामाजिक, राजनीतिक, भौगोलिक परिस्थितियों को साथ लिया और अपनी लगन व मेहनत से मॉरीशस की प्रगति में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया। कहीं न कहीं भारतीय अपनी जड़ों से जुड़े रहने के लिए ही अपनी संस्कृति को मॉरीशस की आव-ओ -हवा में रहे थे। हिन्दुस्तान की हिंदी भाषा को विश्व स्तर पर ख्याति दिलाने का पूरा श्रेय प्रवासी साहित्यकारों को जाता है। प्रवासी भारतीय की रंगों में लोकसंस्कृति विराजती है। प्रवासी भारतीय प्रत्येक संस्कार, तीज-त्यौहार अपनी भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के अनुसार हर्षो उल्लास के साथ मनाते हैं।

मॉरीशस में लोक जीवन और भारतीय संस्कृति -:

भारतीय मजदूरों के साथ उनकी बोलियाँ, उत्तर प्रदेश के मजदूरों को अवधी, भोजपुरी, ब्रज आदि बोलियों में रचित अपना लोक साहित्य भी मॉरीशस की धरती पर ले गये। गोरों ने भारतीयों पर बहुत अत्याचार किये और विकट परिस्थितियों में रखा। इन गिरमिटिया मजदूरों की हिम्मत थी जो ऐसी विषम परिस्थितियों में भी इनका हौसला नहीं टूटा और वे अपनी संस्कृति का निर्वाह वहाँ भी करते रहे। धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक गतिविधियाँ सक्रिय होने लगी और प्रवासी हिन्दुस्तानियों को जीवन यापन के लिए नई प्रेरणा मिल गयी। ईश्वर को याद किया और ज़िन्दगी बसर करने के नये जरिए मिल गए। मॉरीशस में लगभग ६८ प्रतिशत जनसंख्या हिन्दू है, मुस्लिम, सिक्ख एवं अन्य अल्प मात्रा में निवास करते हैं। मॉरीशस की संस्कृति मिली-जुली है। भाषा, वेशभूषा, खान-पान आदि में विविधता देखी जाती है। प्रवासी भारतीय अपने मूल अस्तित्व को बचाये रखने के लिए सभी तीज-त्यौहार धूम-धाम से मनाते हैं। महाशिवरात्रि, होली, दीपावली, गणेश चतुर्थी, दशहरा, रामनवमी आदि पर्व उत्तर भारतीय मनाते हैं वहीं दक्षिण भारतीय उगाड़ी एवं मकर संक्रांति पर पोंगल का उत्सव दक्षिण संस्कृति के अनुसार मनाते हैं। मॉरीशस भारतीय संस्कृति का केन्द्र बनकर विश्व स्तर पर उभर कर आ रहा है। भारतीय अपने साथ अपनी बोलियों को भी प्रवास कर मॉरीशस लेकर गये थे। मॉरीशस में भोजपुरी भाषा बेहद लोकप्रिय है, फ्रेंच के साथ भोजपुरी भाषा के शब्द व्यवहार में लाये जाते हैं। रामलीला, नौटकी जैसे प्रचलित लोक नाट्यों में संवाद भोजपुरी भाषा में होते हैं। माता के जगराते, नवरात्र में लोक कथाओं का पाठ किया जाता है, विशिष्ट समारोह के अनुरूप लोकगीत गाये जाते हैं। मॉरीशस में मंदिर, मस्जिद एवं गुरुद्वारे भी हैं। विश्व में भारतीय कहीं भी निवास करें वहाँ वे अपने देवी-देवताओं को ले जाते हैं। मॉरीशस के मध्य में एक तालाब है जिसे गंगा तालाब के नाम से जाना जाता है। इसी के तट पर भगवान शिव की १०८ फीट ऊँची मूर्ति की स्थापना की गयी है जिसे 'मॉरीशसेश्वर नाथ' कहा जाता है तथा भारतीय इसे तेरहवां ज्योतिर्लिंग मानते हैं, मॉरीशस का केदारनाथ भी कहा जा सकता है। महाशिव रात्रि को यहाँ राष्ट्रीय पर्व की तरह बड़े धूमधाम से मनाते हैं। मॉरीशस में मंदिरों की काफी संख्या है यहाँ के मंदिरों की कलाकृति में उत्तर व दक्षिण शैली पायी जाती है। यहाँ प्रधान देवता का कोई विशिष्ट मंदिर नहीं है अपितु विभिन्न देवी-देवताओं की मूर्तियों की स्थापना की गई है। अपनी-अपनी आस्था के मद्देनजर लोग अपने ईष्ट की आराधना

करते हैं। मॉरीशस में विविधता में एकता है। अन्य धर्मो की बात करें तो मुसलमान ईद-उल-फितर अपनी परम्पराओं के अनुकूल मनाते हैं। मॉरीशस में बेहद खूबसूरत मस्जिदों का निर्माण भी किया गया है। मुस्लिमों के लिए सप्ताह के दिनों की ईद जुमा (शुक्रवार) है अतः मॉरीशस में जुमे के दिन दोपहर को सारा बाज़ार बंद कर दिया जाता है जिससे मुस्लिमों की इबादत में खलल नहीं पड़ता। सिख, ईसाई भी अपने पर्व-महोत्सव मिल जुलकर मनाते हैं। श्रद्धा और आस्था का ऐसा आयाम भारत के बाद केवल मॉरीशस में देखने को मिलता है।

भारतीय लगभग दो सौ वर्ष पूर्व मॉरीशस पहुँचे भारतीयों ने इसे 'मारीच देश' के नाम से पुकारा। उपनिवेशी शासकों ने भारतीयों को गुलाम बनाया और उनका हर रूप से शोषण किया चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक गिरमिटिया मजदूरों के सामने उनकी बहू-बेटियों के साथ शारीरिक संबंध बनाए और त्रासदीय जीवन जीने के लिए मजबूर किया। कष्टों के निवारण हेतु 'रामचरित मानस' का सहारा लिया। उनके लोक जीवन में धार्मिक संस्कारों ने अहम् भूमिका निभायी कह सकते हैं। 'रामचरित मानस' की चौपाइयाँ ऐसी दुखदायक परिस्थितियों में संजीवनी बूटी का कार्य कर रही थी। मॉरीशस में भारतीयों के घरों में भी मंदिर देखने को मिलते हैं जिनमें हनुमान, गणेश, शिव, दुर्गा आदि देवी-देवताओं की मूर्तियों की स्थापना घरों में करत हैं। भारतीय लोक संस्कृति को जीवित रखने के लिए वे अपने संस्कार, रस्मों-रिवाज, नामकरण, पुंसवन, गर्भाधान, चाहें शादी विवाह की रस्में हो सभी को परम्परा के अनुकूल मनाते हैं। यहाँ भारतीय लोक संस्कृति जर्रे जर्रे में समायी है। पर्वों के अनुकूल मेलों का भी आयोजन किया जाता है। लोकगीतों में सोहर गीत, ललना के गीत, शादी के गीतों में हल्दी-मेंहदी के गीत, तेल चढ़नी, बारात, विदाई आदि गीत भोजपुरी, ब्रज, अवधी बोलियों में गाये जाते हैं। गाँवों में 'बिरहा' और 'हरपरौरी' जैसे लोकगीत गाये जातें हैं। खान-पान के विषय में भारत विश्व प्रख्यात है हमारे यहाँ के स्वादिष्ट व्यंजनों का लुप्त अन्य देश के लोग मजे से उठाते हैं। मिठाई, समोसे, कचौडी रोटी-सब्जी आदि को मॉरीशस के स्ट्रीट फूड (गली व्यंजन) में शुमार किया जा सकता है। भारतीय सब्जियाँ एवं फल भी उपलब्ध हैं। मॉरीशस में उच्च वर्ग हो या मध्यम वर्ग सभी की शादियों में आज भी केले के पत्तों पर भोजन परोसा जाता है। शादी-विवाह में किये जाने वाले संस्कार हल्दी, मेंहदी, संगीत, तिलक, अग्नि के समक्ष भाँवर (फेरे) आदि रश्मों का निर्वाह भारतीय संस्कृति और पद्धति के अनुरूप किया जाता है। मॉरीशस में सिनेमाघरों, दुकानों, गावों,

गलियों, वाहनों के नाम भारतीय क्षेत्रों व विषय से प्रेरित होकर रखे गये हैं। नालंदा, सूर्यवंशी, बनारस सम्राट आदि नाम सुनने को मिलते हैं। मॉरीशस की युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति ने बहुत प्रभावित किया है खासकर भारतीय सिनेमा का जादू उनके सर चढ़कर बोलता है। वहाँ के अंग्रेजी में गीत सुनते हैं लेकिन हिंदी, भोजपुरी, उर्दू के गीत व गज़ले उन्हें अधिक प्रिय हैं जिन्हें वे बड़े शौक से गुनगुनाते भी हैं। युवा फ्रेंच, मॉरीशस में भारतीयों को गुलाम बनाकर रखा गया था लेकिन आज वे ही भारतीय वहाँ अपनी महान संस्कृति अपनी परम्पराओं का निर्वाह स्वतंत्रतापूर्वक कर रहे हैं। अपनी सांस्कृतिक विरासत को पराये मुल्क में लुप्त होने से बचाया। मॉरीशस में बसने वाले प्रवासी भारतीयों का लोक जीवन दो संस्कृतियों का द्योतक है। मॉरीशस को लघु या नन्हा भारत कहा जा सकता है। हमारा खान-पान, रहन-सहन, तीज-त्यौहार, वेशभूषा इत्यादि विश्व में हमें औरों से विशिष्ट बनाती है। वहाँ भारतीय संस्कृति की अहमियत है। विश्व में प्रवासी भारतीय कहीं भी निवास करें किन्तु वे अपने मूल से, अपनी जड़ से गर्भनाल से जुड़े हैं। तन से चाहे जहाँ भी हो लेकिन मन तो अपनी मिट्टी की महक से ही तन्मय होता हैं ये अपने वतन से प्रेम ही है जो प्रवासी साहित्यकार हिंदी को महत्त्व देकर साहित्य रच रहे हैं। अभिमन्यु अनत, रामदेव धुरंधर, सुषम वेदी, तेजेन्द्र शर्मा, सुनीता जैन, दिव्या माथुर, कादंबरी मेहरा, उषा वर्मा, इला प्रसाद, ज़किया जुबैरी, अनुराग शर्मा आदि ने अपना अतुलनीय योगदान हिंदी प्रवासी साहित्य को दिया है। मॉरीशस की लोक संस्कृति पर प्रहलाद रामशरण ने अपना योगदान दिया उनकी पुस्तक 'मॉरीशस लोक साहित्य और संस्कृति' में मॉरीशस की संस्कृति की बारीकी से चर्चा की है। अतः कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति की अखण्ड ज्योति प्रवासी भारतीयों ने विदेशों में जलाए रखी है।

इन सभी पर्व , त्यौहार , विवाह पद्धति , लोक संस्कृति इत्यादि का वर्णन 'पूछो इस माटी से ' उपन्यास में किया गया है।

रामदेव धुरंधर और अभिमन्यु अनंत द्वारा प्रचुर मात्रा में साहित्य सृजन पूर्व मॉरिशस में प्रवासी भारतीयों के दुर्दिनों की यथार्थ अभिव्यक्ति करने वा तथा उनको भविष्य के प्रति आशान्वित करने वाली हिन्दी की रचनाएँ अत्यल्प थी, जिसकी क्षतिपूर्ति वे अपने साथ लाए गये भारतीय धर्मग्रथों जैसे रामचरित मानस, भागवत गीता आदि से करते थे, जिससे उन्हें शारीरिक और मानसिक दोन प्रकार की पीड़ाओं की

सहन-शक्ति प्राप्त होती थी। इस संदर्भ में डॉ. संध्या गर्म का अधोलिखित कथन दृष्ट्रव्य है-"गिरमिटियों को कठिन दिनों में आशा बँधाने वाली दुविधा की मनोदशा में राह दिखाने वाली एक ही पुस्तक थी, रामचरित मानस पोथी । हर सप्ताह सारे प्रवासी भारतीय दिनभर के परिश्रम के बाद 'थके-हारे खेतों से लौटने पर नहा-धोकर साथ बैठकर इसी का पाठ करते थे। उस हिन्दी को जो तुलसी, सूर, मीरा और कबीर की भाषा थी। हिन्दी तो उनकी भारतीय अस्मिता की पहचान बन गई, यहा कारण था कि हर गिरमिटिया और उनके वंशज हिन्दी का बराबर सम्मान करते रहे।"2

मॉरीशस में गिरमिटिया मजदूरों के लिए एक अलग तथा नवीन परम्परा के प्रवर्तन का श्रेय पूरी तरह से उपर्युक्त लेखकों को ही जाता है , जिसमें लेखक श्री धुरंधरजी के उपन्यास 'पूछो इस माटी से ' की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है |

धुरंधर जी का यह उपन्यास मॉरिशस में प्रवासी भारतीयों के उत्पीड़न तथा उनके द्वारा अपनी अस्मिता की पहचान बनाने के लिए किये गये कठिन संघर्षों को केन्द्र में रखकर लिखा गया है और यह पूर्णतया मॉरीशस की सामाजिक , आर्थिक और राजनैतिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। दो भागों में लिखित यह उपन्यास 1987 ई. में प्रकाशित हुआ। इसउपन्यास की सम्पूर्ण कथा को धुरंधर जी ने बहुत ही सफलतापूर्वक अत्यन्त रोचक शैली में प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है, जिससे मॉरिशस की युवा पीढ़ी में अपने संस्कार, संस्कृति, परम्परा, मूल्य और स्वाभिमान की रक्षा के लिए अपने पूर्वजों द्वारा दी गयी शहादत की याद ताजा बनी रहे कि किस तरह उनके पुरुखों ने अपनी अस्मिता की पहचान बनाये रखने के लिए अपनी जान की कुर्बानी तक दे दी। इस उपन्यास के प्रथम भाग में अरकाटियों के प्रलोभन के चंगुल में फँसकर मुझे मानस कोठी (चीनी मिल) में बिहार प्रान्त से आये मजदूरों पर पूँजीवादी फ्रांसीसियों तथा साम्राज्यवादी अंग्रेजों के उत्पीड़न व अत्याचार का हृदय विदारक चित्रण किया गया है। उपन्यास के दूसरे भाग में शोषकों व अत्याचारियों के खिलाफ अपनी अस्मिता व अधिकार की रक्षा के लिए एकजुट हुए भारतीय मजदूरों के संघर्षों को नया आयाम दिया गया है। रामदरस, देशराज, रतन, कंबल आदि मिलकर उस पूँजीवादी तथा अन्यायपूर्ण व्यवस्था को चुनौती देते हैं, जिसका शिकार समस्त अप्रवासी भारतीय हैं। भारतीयों को न केवल उनके मूलभूत अधिकारों से वंचित कर दिया गया था बल्कि अंग्रेज उन्हें इंसान से पहले मजदूर मात्र ही समझते थे। कंवल के

ही शब्दों में 'हमें तो विश्वास था कि अंग्रेज हमारे रक्षक हैं, किन्तु यह जिस तरह की ज्यादती देखने को मिल रही है उससे तो यह नहीं लगता कि हम अंग्रेजी राज्य में सुरक्षित हैं।"

'तुम हमारे न्याय को ललकार रहे हो ? "

"केवल अपना अधिकार जानना चाहता हूँ।"

"तुम्हारा 'अधिकार केवल यह है कि तुम एक मजदूर हो।"3

धुरंधर जी ने इस उपन्यास में मॉरीशसीय समाज के भारतीय प्रवासीयों द्वारा झेले हुए उस अंधकारमय समय तथा गोरों के साथ बिताए हुए उस हर एक पल का वर्णन किया है, जिसको उन्होंने स्वयं भोगा है और जिसका शिकार थे और स्वयं उनका परिवार रहा है। पूँजीवादी व्यवस्था, आर्थिक संसाधनों पर वर्ग विशेष का नियन्त्रण, राजनीतिक प्रभुत्व और उसकी प्रबल महत्वाकांक्षा, वर्गभेद, गोरों का अमानवीय अत्याचार, मानव मूल्यों का हनन आदि के साथ-साथ प्रवासी भारतीयों का शोषण, मिल मजदूरों का शारीरिक, आर्थिक और नैतिक शोषण, बाल मजदूरी, स्त्रियों की दुर्दशा, अधिक परिश्रम-कम मजदूरी, प्रवासी भारतीयों द्वारा अपने अधिकारों के लिए संघर्ष व उनका दमन, बिना अपराध के भी दण्ड का प्रावधान, कृषि व औद्योगिक व्यवस्था में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी आदि के यथार्थ चित्रण द्वारा मानवीय संवेदना व अप्रवासियों के अंतर्मन को कुरेदने में सफल रहे हैं। अत्यन्त विषम परिस्थितियों में भी भारतीय अप्रवासियों ने कठिन परिश्रम व लगन से मजदूरी करके मॉरिशस की भूमि को अपने खून-पसीने से सींचा है। यदि यह जानना है तो इसका जीवंत प्रमाण वहाँ की उपजाऊ कृषि है, जी ऊसर बंजर से आज हरित कृषि में परिवर्तित हो चुकी है। उपन्यास का नामकरण 'पूछो इस माटी से' रखने का तात्पर्य यही है कि मॉरीशस में आज जी शस्यश्यामला खेती दिखाई देती है, उसको उसका वर्तमान स्वरूप दिलाने में भारतीयों के कठिन परिश्रम, त्याग, समर्पण व शहादत के फलस्वरूप ही सम्पन्न हो सका है। वर्तमान युवा पीढ़ी को यह बात याद रखनी चाहिए। उपरोक्त कारणों से ही उपन्यास की विषय-वस्तु और नामकरण में समीपता तथा सार्थकता सर्वाधिक है।

'पूछो इस माटी से 'प्रवासी भारतवंशी में साहित्यकार रामदेव का महत्वपूर्ण उपन्यास है। इसका कथानक दो भागों में विभक्त है। उपन्यास में उन भारतीय मजदूरों की कथा है जो फ्रांसीसियों द्वारा भारत से मारीच देश में ले जाए गए। उन्हें सपना दिखाया गया था कि मारीच देश में पत्थर उलाटने से सोना निकालता है। कलकत्ता बंदरगाह से पानी का जहाज रवाना हुआ। तब जहाज में चढ़ते हुए मजदूर को दस-दस रुपए दिए गए थे, जिन्हें पाकर से फूले नहीं समाए थे। उस जहाज में भोजपुरी, बंगाली, मराठी और तमिल भाषा-भाषी थे। भिन्न भाषाएँ पर थे सभी भारतीय | भारतीयों का यह जत्था दो दलों में बंटा हुआ था। इस कसम के लिए उन्हें रूपसिंह ने सबको तैयार किया था। जहाज को तैरते हुए चार दिन बीत गए। सभी भूख से व्याकुल थे। पर उनकी पीड़ा को समझने वाला वहाँ कोई नहीं था। जहाज में ही इन गरीब मजदूरों को पता चला कि वे गलत लोगों के चंगुल में फंस गए हैं। अत्यधिक परेशान होकर जब तपासी के बेटे ने जहाजियों के लिए खाना मांगा तो उसे उठाकर समुद्र में फेंक दिया गया। यहीं से शुरू होता है उनकी यातनाओं का लंबा सिलसिला। चारों ओर समुद्र ही समुद्र, ऊपर आसमान। इसके अलावा उनके साथ थी भारत से जुड़ी खट्टी मीठी और कड़वी यादें। विभिन्न धर्मो को मानने वाले इन लोगों में वे भारतीय भी थे जिन्होंने इनको मारीच देश ले जाने और सुनहरे सपने दिखाने का काम किया था। वे इस उपन्यास में अलग भूमिकाओं में नजर आते हैं।

उपन्यास के पहले भाग में मुझे मानस कोठी के मजदूरों की यातनाभरी दास्तान है, इन मजदूरों के लिए एक अलग बस्ती बनी हुई है। इन्हें मजदूर न कहकर दास कहे तो अत्युक्ति नहीं होगी शरीर, मन और आत्मा से दास। गोरे और पहरेदार इन्हें कुली कहकर बुलाते हैं। इनके सामर्थ से अधिक काम लिया जाता है। बदले में कभी सामूहिक राशन, तो कभी प्रति व्यक्ति राशन दिया जाता है। काम में जरा सी भी कोताही हो जाने पर इन्हें डंडों से, कोडों से पीटा जाता है। इस तरह पीटकर भी यदि कोई कार्य में तत्परता नहीं दिखाता तो उसे कोठरी में डाल दिया जाता है। अंधेरी कोठरी में ऊपर की ओर बस एक छोटा सा झरोखा है। दो-चार दिन इस कोठरी में भूखा रखकर मजदूर की हेकड़ी निकाली जाती है। ताकि वह दोबारा सजा भुगतने के लिए वहाँ आने की कल्पना भी न कर सके। अन्याय के खिलाफ जरा सी भी आवाज उठानेवालों के लिए भी कोठरी के द्वार खुले रहते थे | सजा भुगतने के बाद भी यदि मजदूर अपनी जिद पर अड़ा रहता तो उसे जेल में डाल दिया जाता था |

'पूछो इस माटी से' उपन्यास का पहला भाग यातनाओं से भरी ऐसी अंधेरी सुरंग है ,जिसका एक मुहाना खुला है और दूसरा खाई विधाओं में खोया लगता है | जब किसी ने इसके दूसरे मुहाने को ढूँढने का साहस किया है तब उसके शरीर तथा मन को गंभीर कष्टों का सामना करना पड़ा है | यहाँ तक कि जान भी गँवानी पड़ी | इसमें भारतीय मजदूरों के पुरखों के खून पसीने का इतिहास अपने अस्तित्व और स्वाभिमान की रक्षा के लिए किये गए सतत संघर्ष तथा संस्कृति के संरक्षण की गाथा है | इस भाग में चट्टानों और बीहड़ वनों को समतल कर बनाई माटी है ,जिस पर गन्ने की खेती लहलहा रही है | गन्नों से चीनी का उत्पादन हो रहा है | चीनी की इस मिठास के पीछे छिपा इतिहास बहुत कड़ुवा है, रोंगटे खड़े कर देनेवाला है |

रामदेव धुरंधर के अनुसार -" यहाँ राजा नहीं हुए ,यहाँ पूँजीवादी शोषक हुए | इन्हीं के शोषण के नीचे अकुलाते हुए लोगों की जीवन गाथा का दावा यह उपन्यास है | उपन्यास का समर्पण भी लेखक ने यातना के सफर में साथ रही जीवन साथी को किया है | अपनी पत्नी देवरानी को जिसने मेरे इस उपन्यास की रचना प्रक्रिया में हमारे देश की इतिहास की पीड़ा को मेरे साथ जिया है |"4

इस उपन्यास की कथावस्तु का दूसरा भाग बुजुर्ग हो चुके देवरतन के लौटने पर प्रारंभ होता है |-" क्रान्ति की जो मशाल अपने आरंभिक समय में देवरतन ने जलाई थी उसके परिणामस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति की आँखों में उन्होंने व्यवस्था के प्रति क्रोध देखा | " 5 उसका अनुभव यह रहा है कि कोठियों से निकाल-निकालकर जितने लोग शहरों में काम करने के लिए पहुँचे उनमें व्यवस्था से अपनी बात मनवाने के तौर-तरीकों की जानकारी मिली। -" एक ओर स्थिति भी साथ के साथ चल रही थी | मारीच देश के अंदर भले भले ही फ्रांसीसी बसे हो किन्तु अंग्रेज हुकूमत ने उसकी सीमाओं पर हो रहे अत्याचारों की गूँज यहाँ ब्रिटिश सरकार तक पहुँची तो यहाँ से मारीच देश में उन्होंने चार वकीलों को इन मजदूरों की स्थिति जानने के लिए भेजा, कहने की आवश्यकता नहीं कि कोठी के मालिकों ने उनकी आवभगत कर उन्हें विदा कर दिया और बस्ती की ओर जाने ही नहीं दिया | " 6

इस राजनीतिक परिदृश्य को ध्यान में रखकर देवरतन ने अंग्रेजों के गवर्नर कुँअर के लिए पत्र लिखा जिसमें बताया गया कि -"मजदूरों के साथ जो अमानवीय व्यवहार हो रहा है उसे दूर किया जाए | उसके लिए डेयरटन ने इन मजदूरों के जीवन में सुधार लाने

का अनुरोध किया |" 7 एक छोटे पत्र में साहब के लिए भी सूचना भिजवा दी कि मूल पत्र गवर्नर के पास भेज दिया गया है | साहब के प्रकोप से बचाने के लिए देवरतन उस क्षेत्र को छोड़कर कहीं चला गया | देवरतन का यह पत्र सिर्फ एक आधार बन गया | इसी आधार पर कंवल ने अपने न्याय के लिए प्रयत्न चालू रखा |

भोजपुर के देवरतन कुशल मूर्तिकार (259) उर्फ रमाकांत (233) अपने देश पहुँचने का उद्देश्य बताते है -" मैं हाथों का कैदी हूँ.... सोने के लिए लालच नहीं था | मेरे हाथ तो उस हर पत्थर को तराशने के लिए बेताब थे, जिनके नीचे सोना था। सोना कोई ओर बटोरे, मेरे हाथ केवल पत्थरों को समेटें। रामदास जब मारीच देश पहुँचता है तब उसकी मुलाकात देवरतन से होती है और ढाढस बंधाता है कि हम अपने है। कंवल से उसे लगाव हो जाता है। वह कंवल को ही यह कलाकारी सौंपकर भगवान के पास जाना चाहता था। " 8

मारीच देश में आने से पहले बिहार में देवरतन का विवाह रघुनाथ के उच्च घराने की लड़की तरुणा के साथ होनेवाला था। पहले तो तरुणा के पिता ना-ना करते रहे, बाद में बेटी की जिद के कारण उन्हें यह रिश्ता मानना पड़ा। जमींदार होने के कारण अंग्रेजों ने उन्हें रायसाहब की पदवी दी थी इसलिए अंग्रेजी सत्ता के पक्ष में रहते थे ,जबकि देवरतन उस सत्ता के विरोधी थे। वह सत्ता देवरतन को बागी मानती है और उसके पीछे पड़ी रहती है। देवरतन ने तरुणा को बहुत समझाया कि इन हालात में वह उसे अपने साथ नहीं रह सकता, किन्तु उनके लिए देवरतन प्रेमी ही नहीं एक कलाकार की कलाकारी की वह पूजा करती थी।कलकत्ता जाने से पहले देवरतन ने अपने हाथों से बनाई राधा की मूर्ति करुणा को दी। तब तरुणा ने कहा था -"यह तो मैं हूँ | तुम अपने को मुझे सौंपकर जाओ मेरे कृष्ण।"' 9 पकड़ा-पकड़ी के इस माहौल में कोई नई मूर्ति बनाना देवरतन के वश में नहीं था।बोला-"तरुणा इस दुनिया में प्रेम बहुत अभागा है | किसी का प्रेम अभी सार्थक हुआ है , जो हम यह अपेक्षा करें कि हमारा प्रेम दुनिया से निराला हो हो ? कृष्ण तो भगवान थे, फिर भी राधा के साथ जुड़े हुए प्रेम को स्थाई नहीं रख सके थे।"' 10

प्रस्तुत उपन्यास के देसराज को एक ही शौक है ,ग्रामीण संस्कृति के अनुसार जड़ी-बूटियों को एकत्र करना। दवाइयाँ बनाना। पौधों की प्रकृति और प्रभाव की जानकारी लेना | अपना काम समाप्त करके देसराज लौटते समय रास्ते से ही जंगल के

बीहड़ की ओर चला जाता और अलग-अलग प्रकार की पत्तियों , टहनियों , छालों और जड़ों इत्यादि में रोगों के निदान की तलाश करता था।-" किरथा घास के रस से वह घावों को ठीक करनेवाली दवाई बनाता है।" 11

इस उपन्यास के संदर्भ में रामदेव धुरंधरजी ने इस तरह वर्णन किया है -" मैं इस बात पर बल दे कर कहता रहा हूँ भारतीय मजदूर जब मॉरिशस आये थे अपने रहन सहन और भारतीय संस्कृति के साथ आये थे। ऐसा ही होता मानो वे एक घर से दूसरे घर में जा रहे थे। हम भी आज के जमाने में अपने घर और देश से दूसरे देश जाते हैं तो हमारे वजूद जो होता है वह हमारे साथ जाता है। कुछ ही दिनों में हम अपने घर वापस आ जाये तो हममें कुछ परिवर्तन आता नहीं है। पर दूसरे देश जा कर स्थायी रूप से बस जायें तो परिवर्तन इस अर्थ में आवश्यक हो जाता है क्योंकि उस देश के हिसाब से जीना पड़ता है। भारतीय भी यहाँ हमेशा जीने के लिए आये थे और इस जमीन के हिसाब से उनमें परिवर्तन आकर रहता जो आया भी एक बात अच्छी हुई परिवर्तन में मनन और विवेचन भी था। मनन और विवेचन विशेष कर उस बात के लिए कि भारत से जो गलतियाँ हमारे साथ चली आयी है क्या उन्हें जीवित बनाये रखें या उतार फेंकें? यहाँ मेरा इशारा विशेष कर उन गलतियों की ओर से जिनकी तुलना जानलेवा जहर से की जा सकती है। दहेज प्रथा, बाल विवाह और छुआछूत ईश्वर की कृपा रही इस देश में दहेज प्रथा की नींव पड़ी नहीं। मैंने 'पथरीला सोना' उपन्यास लिखते वक्त बहुत खोज की थी क्या इस देश के इतिहास में यह कलक शामिल रहा है पाल पोस कर बेटी दो और दामाद की ओर से शोषण का घेरा इस तरह से पड़े दहेज दो तभी तुम्हारी बेटी को मेरे यहाँ सुख नसीब हो सकता है। ऐसा कलंक इस देश के माथे पर चढ़ा नहीं है। पर हॉ, लड़की के पिता ने अपनी खुशी से दिया है और यह आज भी जारी है। दहेज के शोषण में लाख रुपये का नाम हो सकता है, जबकि खुशी से देने वाला लड़की का पिता तो करोड़ों दे देता है।यह प्रेम है। यह उपन्यास भी 'पथरीला सोना' जैसा ही उपन्यास है ,उसमें यही सब दर्ज किया गया है |" 12

बाल विवाह और छूआछूत का भी प्रसंग उक्त प्रसंग में उठाया गया है। मॉरीशस में बाल विवाह मानें तो वह ऐसा था तेरह साल में लड़की की शादी हो जाती थी। पर अब ऐसा नहीं है। यहाँ अब स्कूली शिक्षा अनिवार्य है। माँ बाप अपने बच्चे को पाँच की उम्र में स्कूल में दाखिल न करवाएँ तो उन्हें जेल की सजा हो सकती है। लड़की तेरह की उम्र में यहाँ प्राथमिक स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद कालेज जाना शुरु करती है। बीस

बाईस साल तक वह कालेज से जुड़ी रहती है। फिर युनिवर्सिटी की पढ़ाई की बारी आती है। पर युनिवर्सिटी न जायें तो उम्र बीस से ऊपर हो जाती है। इस उम्र में शादी होना यहाँ अब आम बात है।

बाकी छुआछूत वाला जो प्रसंग है यह आरम्भ में जरूर बहुत ही आक्रामक रहा था। आर्य समाज की नींव यहाँ पड़ने पर छुआछूत का बहुत हद तक स्तनाबूद हो गया है। बाकी जो शेष हो भावी संतानें इसके लिए तैयार हो रही है। यहाँ के भारतीय मूल के बच्चे अपने को अब केवल हिन्दू जानते हैं। यह इस देश के लिए स्वर्णिम है।

इस प्रकार 'पूछो इस माटी से ' उपन्यास का विभिन्न स्तरों पर विश्लेषण करने का प्रयास मैंने किया है |

'पथरीला सोना ' उपन्यास में रहन-सहन ,पोशाक , धार्मिक त्यौहार , बाल पर्व , विवाह ,लोकगीतों में संस्कृति , लोक कथाओं में संस्कृति :-

रामदेव धुरंधरजी का यह उपन्यास छह खण्डों में विभाजित है |

'पथरीला सोना' रामदेव धुरंधर द्वारा छ: वृहत खण्डों में रचित महाकाव्यात्मक तत्वों से परिपूर्ण एक अमर ऐतिहासिक उपन्यास है। मॉरीशस के हिन्दी उपन्यास जगत को आन्दोलित कर देने वाले इस उपन्यास का पहला, दूसरा व तीसरा खण्ड सन् 2008 में एक साथ प्रकाशित हुआ, जबकि चौथा, पाँचवा व छठा खण्डन 2012 में प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास को लिखने में उन्हें कितने कठिन शारीरिक व मानसिक परिश्रम का सामना करना पड़ा। यह उनकी हाल ही में प्रकाशित कहानी संग्रह 'अंतर्मन' के 'पुरोवाक्' में लिखित उनके ही शब्दों में देखा जा सकता है -'"मेरे अपने छ: खंडीय 'पथरीला सोना' उपन्यास ने मुझे बहुत थकाया है। इसी बात पर कुछ दिनों अपने को उपन्यास की अपेक्षा कहानी में समर्पित रखना चाहता हूँ। " 13 पहले इस उपन्यास को तीन ही खण्डों में प्रकाशित करने की उनकी योजना थी, लेकिन आगे चलकर भारतीय प्रवासियों व मजदूरों की वर्तमान दशा को भी संदर्भित करने के मोह के कारण इसके स्वरूप में परिवर्तन करके सर्वथा नये कलेवर में हिन्दी साहित्य के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ा। व्यापक मात्रा में पुनर्लिखित व पुनर्मुद्रित इस उपन्यास के प्रथम तीन खण्डों में इन्होंने भारतीय मजदूरों के प्रथम मॉरिशस आगमन सन् 1834 से लेकर सन् 1912 तक की उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि को

औपन्यासिक कलेवर में पात्रों और घटनाक्रम के माध्यम से पिरोया है, तो बाद के तीन खण्डों में आगे के कालखण्ड अर्थात् सन् 1912 से लेकर सन् 2009 तक के परिवेश को बड़ी ही बुद्धिमत्ता चतुराई से कथावस्तु को आधार बनाकर जीवंत किया गया है। इतने वृहद कलेवर एवं विस्तृत कालखण्ड जो लगभग दो सदी का प्रतिनिधित्व करते हों को आधार बनाकर उपन्यास के रूप में रचना वास्तव में एक समर्थ साहित्यकार द्वारा ही संभव है। यदि मॉरिशस के समग्र जन-जीवन की गहराई से झांकी पानी हो तो यही एक कृति मॉरिशस के अतीत एवं वर्तमान के यथार्थ को निरूपित करने के लिए पर्याप्त है।

एक तरफ जहाँ इस उपन्यास के प्रत्येक खण्ड का क्रमागत अध्ययन हमें प्रवासी भारतीयों के दर्दनाक इतिहास और संकटग्रस्त वर्तमान से रू-ब-रू कराता है, तो वहीं दूसरी तरफ धारावाहिक छ: खण्डों में प्रकाशित इस उपन्यास के प्रत्येक खण्ड का अपना स्वतन्त्र अस्तित्व भी है, जो स्वयं में ही एक उपन्यास की पूर्णता का बोध कराता है। सम्पूर्ण उपन्यास में लगभग छः सौ कल्पित पात्र उपन्यास के कथानक को उसके गन्तव्य तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इतने विस्तृत फलक को साधना वह भी अनन्त सफलता के साथ यही बात धुरंधर जी के नाम को भी सार्थकता प्रदान करती है। धुरंधर जी के इस उपन्यास में बिहार प्रान्त के भोजपुरी भाषा-भाषी श्रमिकों का संघर्ष, बलिदान, यातना, जिजीविषा व रीति-रिवाज से लेकर स्वतन्त्र देश मॉरिशस में राजनीतिक पैंतरेबाजी, स्वार्थपरकता, खलनायकी, मजदूरों का शोषण, गोरों का अत्याचार, आर्थिक विपन्नता, अपनी भाषा एवं संस्कृति के प्रति लगाव फ्रेंच और अंग्रेजी का प्रभुत्व, जमींदारी व्यवस्था, रूढ़िवादिता व सामाजिक विद्रूपता आदि सभी कुछ व्यक्त हुआ है |

धुरंधर जी का यह उपन्यास लगभग तीन हजार पृष्ठों में रचित है। भाषा की सरलता व प्रवाहमयता, कथ्य की विविधता एवं रोचकता, संवाद निरन्तरता एवं पात्रानुकूल संवाद योजना और शैलीगत नवीनता आदि के कारण उपन्यास का प्रत्येक पृष्ठ सजीव होकर बोलता सा प्रतीत होता है। धुरंधर जी ने इस उपन्यास में अन्य औपन्यासिक तत्वों के साथ-साथ पात्रों की मनोदशा, भावनाओं एवं संवेदनाओं की सूक्ष्म अभिव्यक्ति हेतु मनो-विश्लेषणात्मक पद्धति का भी सम्यक् प्रयोग किया है। उपन्यास की कथावस्तु सुसंगठित, क्रमबद्ध व प्रभावात्मक है।

मुख्य कथा के साथ-साथ प्रयुक्त प्रासंगिक कथाएँ बड़ी ही सहजता व रोचकता से मुख्य कथा का विकास निर्धारित करती है। आवश्यकतानुसार यथा-स्थान प्रयुक्त मनोविश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग धुरंधर जी की मनोवैज्ञानिक समझ का रेखांकित करने के लिए पर्याप्त है और यह मॉरिशस की सामाजिक पृष्ठभूमि पर बिल्कुल खरा उतरता है। मॉरिशस का हिन्दी साहित्य प्रवासी भारतीयों के अथक परिश्रम, शोषण व संघर्ष की जमीन से सृजित है तथा यह मॉरिशस की सामाजिक आर्थिक व राजनैतिक विषमता व विपरीतता की उपज है। इस उत्स को इस उपन्यास में जिस वास्तविक और ईमानदारी से रेखांकित किया गया है। वह अविस्मरणीय है।

उपन्यास के पहले खण्ड का प्रारम्भ ब्रिटिश उपनिवेशकों द्वारा भारत के बिहार प्रान्त से भारतीयों को बलात् श्रमिक के रूप में जहाज से भेजने की प्रक्रिया से होता है। इस खण्ड में रामदरश, देवरतन और कँवल जैसे प्रमुख पात्रों के माध्यम से भारतीय श्रमिकों पर गोरों की पाशविकता, भोजपुरी भाषा की मिठास, दूर देश में अपनी भाषा तथा संस्कृति के प्रति लगाव व आपसी एकता, फ्रांसीसी जमींदारों की निरीहता, चीनी मिलों में काम करने वाले भारतीय श्रमिकों पर किये जाने वाले अमानुषिक अत्याचार व उनका शारीरिक और मानसिक शोषण, प्रशासन पर अंग्रेजों तथा भूमि पर फ्रांसीसियों का आधिपत्य तथा आर्थिक एकाधिकार, खेतिहर मजदूरों के पारिवारिक यथार्थ का चित्रण व उनको दी जाने वाली यातनाएँ, विषम जलवायुविक परिस्थितियों में भी भारतीय श्रमिकों को हाड़-तोड़ मेहनत, श्रम में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी, वर्गभेद मानवाधिकारों का हनन, अन्याय, अत्याचार, अनैतिकता, जबरन कैद की सजा तथा विभिन्न विसंगतियों के अस्तित्व को चुनौती देने के लिए भारतीय श्रमिकों की एकजुटता आदि का यथार्थ प्रथम भाग में दृष्टान्त है।

पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में विभाजित उपन्यास के दूसरे खण्ड में प्रथम खण्ड की कथा ही विस्तार पाती दिखाई देती है, लेकिन इस खण्ड में कुछ परिवर्तन भी दिखलाई पड़ता है। यातनाओं का स्वरूप तो वही है लेकिन उसमें अब विविधता आ गयी है। इतिहास से वर्तमान की ओर चलने की प्रक्रिया में यह अवश्यम्भावी भी है। धीरे-धीरे अब भारतीय श्रमिकों का संघर्ष और उनको दी जाने वाली प्रताड़नाएँ उनके जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी हैं। शोषण जहाँ अंग्रेजों और फ्रांसीसियों की आदत सा बन गया है, वहीं वह भारतीय श्रमिकों के लिए भाग्य प्रदत्त ईश्वरीय वरदान। लेकिन फिर भी वे

संघर्ष से मुँह नहीं मोड़ते और नियति के इस विधान को बदलने की हर संभव कोशिश करते हैं, भले ही कामयाबी अभी तक उनसे कोसों दूर ही क्यों न हो। तीस साल बाद कैद की सजा पूरी कर केवल परिवर्तन की आशा लिए वापस आता है और पुनः संघर्षरत हो जाता है. लेकिन दिल दहला देने वाली उसकी हत्या और उस हत्या के प्रतिकार से स्पष्ट हो जाता है कि परिवर्तन की आस को अभी केवल कल्पना लोक तक ही सीमित रखना उचित है। यथार्थ उससे बहुत दूर व बहुत अलग ही वस्तु है। उपन्यास के इस द्वितीय खण्ड में उपन्यासकार ने विद्रूपताओं के गाथागान से ऊपर उठकर मनुष्यों की स्वाभाविक प्रक्रियाओं जैसे राधा-किशन का अधूरा प्यार, विनय-माधवी प्रेम प्रसंग, आपसी झगड़े, पारिवारिक कलह आदि को कथावस्तु के सहायक तत्वों के रूप में शामिल किया है।

उपन्यास के तीसरे खण्ड में माधवी का विनय को पति के रूप में पाने का स्वप्न खण्डित हो जाता है। अल्पशिक्षित विनय समाजसेवी के रूप में अपनी एक अलग पहचान बनाने में कामयाब रहता है, साथ ही वह माधवी का सेवक भी बन जाता है। इस खण्ड में परिवर्तन की दस्तक भी साफ सुनाई पड़ती है। बंधुवा जीवन का बंधन टूटता नजर आता है। ढाँका गाँव के गरीबों के अपने घर होते जाते हैं। गरीब श्रमिक अपने खून-पसीने की कमाई से जमीन खरीदने में समर्थ दिखाई देने लगते हैं। एक खेतिहर मजदूर से किसान की पदवीं तक पहुँचना उनके कठिन संघर्षों के परिणामस्वरूप हुई तरक्की का ही प्रतिफल है। तरक्की तो हुई लेकिन शोषण कम नहीं हुआ। डॉक्टर ओलिये एक बड़े ही विद्रूप षड्यन्त्र से माधवी का शीलभंग कर देता है। माधवी के गर्भ से सुरेखा का जन्म होता है और उसके लालन-पालन की जिम्मेदारी मुँहबोला पिता विनय उठाता है। माधवी शीलहरण की उस पीड़ा से टूटती जाती है और उसी पीड़ा में उसका अन्त भी हो जाता है। विनय सुरेखा को पाल-पोष कर युवा उम्र की दहलीज पर खड़ा तो कर देता है लेकिन जीवन में हताशा और निराशा में आकंठ डूबा वह अपनी माँ के पास वापस लौट जाता है। यहाँ आकर विनय किसान तो बन जाता है लेकिन संघर्ष अब भी उसके साथ कम नहीं है। गोरों की चीनी मिल में ईख की चोरी का आरोपी होने के कारण कँवल के समान विनय की भी निर्मम हत्या यह दर्शाती है कि फ्रांसीसियों के चंगुल से निकलना अभी भी आसान नहीं है। सन् 1901 में मॉरीशस में कुछ दिनों के लिए गाँधीजी का पर्दापण हुआ था और उनके प्रयास से भारतीयों के मुकदमों की देखभाल के लिए एक वकील का भी यहाँ आगमन हुआ था। इसी समय

गाँधी जी ने मॉरिशस में 'हिन्दुस्तानी' अखबार का प्रकाशन भी किया था। इन सब का प्रभाव उपन्यास के इस तृतीय खण्ड में स्पष्टतः देखा जा सकता है और इस तरह से सन् 1912 तक की प्रवासी भारतीयों की समस्याओं को तीन खण्डों के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध के माध्यम से शैली, कथ्य और प्रस्तुति के प्रत्येक कोण को बेबाकी के साथ चित्रलिखित सा कर दिया गया है।

बहुपृष्ठीय धारावाहिक उपन्यास 'पथरीला सोना' के चतुर्थ खण्ड के केन्द्र में गाँधीवाद है। सन् 1901 ई. में गाँधीजी द्वारा की गयी मॉरिशस यात्रा के दौरान उनके कुछ दिनों के ठहराव ने यहाँ की स्थिति का अधिकतम अध्ययन कर लिया था। परिणामस्वरूप उन्होंने प्रवासी भारतीयों की शिक्षा, एकता और उनकी राजनीतिक भागीदारी पर बल दिया। कालांतर में उनकी यह विचारधारा मॉरीशस में भारतीय प्रवासियों के लिए वरदान सिद्ध हुई। गाँधीवाद का ही प्रभाव था कि मॉरीशस के भारत मूल के कुछ लोग इंग्लैण्ड और भारत से शिक्षा प्राप्त कर स्वदेश लौटकर राजनीतिक स्वतन्त्रता और मानवाधिकारों के प्रति अलख जगानी शुरू की, जिसमें शिवसागर रामगुलाम और प्रोफेसर वासुदेव विष्णु दयाल अग्रगण्य थे। विशेष रूप से इन्हीं दोनों के सार्थक प्रयासों ने मॉरिशस की एक निश्चित परिभाषा देने और मॉरिशस की राजनीति में भारतीयों की भागीदारी निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके अलावा इस खण्ड में शहनाज और दिवाकर कम उम्र में ही कर्तव्यबोध से लेकर जातिबोध के एहसास तक लबालब भर जाते हैं। यह एक तरफ जहाँ उनकी असमय मिली नैतिक और पारिवारिक जिम्मेदारी को दर्शाती है, तो वहीं दूसरी तरफ मॉरिशसीय समाज में व्याप्त हिन्दू-मुस्लिम एकता को भी इंगित करता है। शहनाज और दिवाकर के प्यार में धार्मिक तत्वों की खोज करना एकता का वैमनस्यता द्वारा हनन ही कहा जायेगा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत भारती' का प्रभाव बिरज गुरु जी में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो उनके अंतर्मन में देश-प्रेम की भावना जगाने के लिए पर्याप्त है। बिरज गुरु जी की खेती शारदा की हत्या इस चतुर्थ खण्ड की आत्मा का एक बड़ा ही दारुण पक्ष है। राघव द्वारा ईर्ष्यावश अपने भाई विनय के बैल की हत्या पारिवारिक संबंधों में उत्पन्न अलगाव की स्थिति की ओर इशारा करता है। साम्प्रदायिकता, धर्मपरिवर्तन, बहिर्जातीय विवाह की समस्याएँ आदि का दिग्दर्शन भी इसी खण्ड में होता है।

पाँचवे खण्ड में मॉरीशस का स्वाधीनता संघर्ष और उस संघर्ष में भारतीयों द्वारा

दिये गये बलिदान को कथावस्तु में पिरोकर प्रस्तुत किया गया है। इस खण्ड की कथावस्तु का प्रारम्भ मॉरिशस की स्वतन्त्रता (सन् 1968 ई.) से कुछ वर्ष पूर्व से शुरू होकर लगभग बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक तक अबाधित चलती रहती है। मॉरीशस की स्वतन्त्रता के पश्चात शासन की बागडोर मॉरीशसीय मूल के लोगों के हाथों में आ गयी, लेकिन उनका व्यवहार तो अंग्रेजों व फ्रांसीसियों से भी बर्बर था। वे अपनों के साथ ही ऐसा व्यवहार करते थे जैसा कभी उपनिवेशकों ने नहीं किया था। इस कालखण्ड तक आते-आते पारिवारिक संबंधों का स्वरूप भी बदल गया था। ईर्ष्या-द्वेष, वर्गगत भेदभाव, अविश्वास व अंधविश्वास आदि समाज के केन्द्र में आ गये, फलस्वरूप धीरे-धीरे मॉरिशसीय जनता का उस आजादी से मोहभंग होना स्वाभाविक था। इसके साथ ही इस खंड में शहनाज की एक ऐसी मार्मिक कहानी भी चलती रहती है जिसका अतिशीघ्र अंत होने वाला नहीं है। इसके अलावा इस खण्ड में शिक्षित भारतीय मूल के लोगों द्वारा समाज सुधार, राजनीतिक सुधार, चुनावी प्रक्रिया, भाषणबाजी, चुनावी वादों आदि को भी कल्पित पात्रों की सहायता से अभिव्यक्त किया गया है।

पुनर्नियोजित एवं व्यापक मात्रा में पुनर्लिखित उपन्यास 'पथरीला सोना' का षष्ठ एवं अंतिम खंड मॉरीशस के वर्तमान (सन् 2009 ई. के आस-पास) पर केन्द्रित है। अब तक इतिहास की गलियों में विचरण करने वाले धुरंधर जी इस खण्ड में वर्तमान के ऐसे चौराहे पर आकर खड़े हो जाते हैं, जहाँ से यह तय कर पाना कठिन हो जाता है कि किस दिशा में आगे बढ़ें? अपना मार्ग परिवर्तित कर लें या यात्रा को ही समाप्त घोषित कर दें? अगर मार्ग को परिवर्तित करें तो किस मार्ग का अनुसरण करें ? समस्या के समाधान का एक तरीका यह भी हो सकता है। कि क्रियात्मक अनुसंधान विधि का सहारा लेते हुए लीक से हटकर स्वनिर्मित मार्ग के पथिक के रूप में अपनी यात्रा अनवरत जारी रखी जाय। इस षष्ठ खंडीय उपन्यास की यात्रा के प्रारम्भ में धुरंधर जी आशावादी थे। उन्हें विश्वास था कि इतिहास के आवरण में प्रवासियों की दारुण गाथा को औपन्यासिक स्वरूप प्रदान करके वर्तमान तक पहुँचते-पहुँचते व्यवस्था में अमूल-चूल परिवर्तन दिखाई देगा, लेकिन भौतिकवाद के द्वारा उनके आशावाद की हत्या कर दी जाती है। यह देखकर धूरंधर जी का हृदय विदीर्ण होकर चीत्कार कर उठता है कि हम पहले क्या थे? और अब क्या होते जा रहे हैं? इतिहास के पन्ने पलटने पर मिलता है, कि प्रवासी भारतीय समाज शोषित, पीड़ित अनेक विद्रूपताओं और विसंगतियों से भरा पड़ा उपनिवेशकों के अधीन था लेकिन मॉरीशस की आजादी के बाद भी आशानुरूप

सुधार नहीं हुआ। उपनिवेशवादी शासन तथा जमीदारी व्यवस्था का अंत तो हो गया शासन-व्यवस्था मॉरिशस मूल के लोगों के हाथों में भी आ गयी लेकिन उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण ने मॉरीशस की संस्कृति, समाज और सोच को इतना ज्यादा विकृत कर दिया कि मॉरीशस के लोग यूरोपीय सभ्यता और संस्कृति के अनुकरण को ही आधुनिकता का प्रतिमान मानने लगे। वर्तमान मॉरिशसीय समाज आजादी का जश्न इस रूप में मना रहा है, राजनीतिक महत्वाकांक्षाएँ प्रबल हो गयी हैं, संबंधों का स्वरूप परिवर्तित होने लगा है और उसमें और अधिक जटिलता आ गयी है। यौन-स्वच्छंदता स्त्री-विमर्श के केन्द्र में हो गयी, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि में भी पश्चिमी रंग चढ़कर बोलने लगा है, अपने संस्कारों और धार्मिक मान्यताओं, परम्पराओं, रीति-रिवाजों आदि के प्रति लोगों के मन में हीन भावना ने घर कर लिया है। टी. वी. विज्ञापनों, इंटरनेट की पहुँच और सोशल मीडिया की अति सक्रियता ने लोगों की जीवन शैली में जितना ज्यादा हस्तक्षेप किया उसका स्पष्ट प्रभाव मॉरिशस के समाज में देखा जा सकता है। वर्तमान मॉरिशस का यही सच है। 'पथरीला सोना' का यह षष्ठ खण्ड इन्हीं समस्याओं से उत्पन्न अन्तर्द्वन्द्वों से बाहर निकलने में प्रयासरत दिखाई देता है। यह अन्तर्द्वन्द्व केवल उपन्यास का ही अन्तर्द्वन्द्व नहीं है बल्कि स्वयं धुरंधर जी भी इसी उधेड़-बुन में लगे हैं कि समस्या पहले क्या थी? और अब क्या हो गयी है ? और अंत में निष्कर्ष और समाधान दोनों पाठकों पर छोड़ देते हैं। यहीं इस महाकाव्यात्मक उपन्यास की नियति है और यही इसके नियंता धुरंधर जी का लक्ष्य और दृष्टिकोण।

उपन्यास का शीर्षक 'पथरीला सोना' उपन्यास के मंतव्य और विषय-वस्तु की सार्थकता की दृष्टि से उचित ही प्रतीत होता है। प्रवासी भारतीय मजदूरों ने किस प्रकार अपने कठिन परिश्रम से मॉरीशस की पाषाण भूमि को शस्यश्यामला कृषि में परिवर्तित कर दिया, यह इसी उपन्यास के एक अंश में देखा जा सकता है "...वे घने जंगलों को खेतों में परिवर्तित तो करते ही हैं, पहले की तरह इनसे भी यही कहा जाता है कि पत्थरों को अपने कंधों पर ढोकर उनके नीचे की जमीन को ईख के खेतों के लिए उपजाऊ बनाओ। कड़े आदेश के अनुसार मजदूरों की मेहनत से पथरीली जमीन ईख के खेतों में बदलती जाती है। उनकी मेहनत के प्रतिफलन में उपजाऊ जमीन को सोना कहें, तो कहना यह भी चाहिए कि मजदूरों की मेहनत से पत्थर भी सोना ही होता है पथरीला सोना.." 14 इसी प्रकार रामदेव धुरंधर और उनके उपन्यास 'पथरीला सोना'

के संदर्भ में 'ग्राम-संस्कृति' इंदौर के संपादक श्री राम शर्मा का कथन भी द्रष्टव्य है- "रामदेव धुरंधर जी मॉरीशस के सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार हैं जो निरन्तर साहित्य साधना में रत हैं। श्री रामदेव धुरंधर इन दिनों एक महान उपन्यास की रचना कर रहे हैं' पथरीला सोना'। इस उपन्यास में प्रवासी भारतीयों की वह गाथा है जो सन् 1834 ई. से लगातार सन् 1912 ई. तक श्रमिकों की भूमिका निभाने भारत से मॉरिशस ले जाये गये थे। उन्होंने उस अनजान द्वीप की पथरीली कीचड़ भरी-अनुर्वर भूमि को इस योग्य बनाया कि वह सोना उगलने लगी। आज मॉरिशस एक समृद्ध द्वीप है, जिसका निर्माण उन प्रवासी भारतीय श्रमिकों ने अपनी श्रम-शक्ति और हजारों बाधाओं के बीच पूरे साहस के साथ किया। 'पथरीला सोना' उपन्यास उसी युग गाथा का दस्तावेज प्रस्तुत करता है।" 15 इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि उपन्यास का नामकरण और विषयवस्तु एक-दूसरे से अंतःसंबंधित हैं और यदि यह कहा जाए कि विषय-वस्तु की दृष्टि से उपन्यास का नामकरण सर्वोत्तम है तो इसमें अतिउक्ति नहीं मानना चाहिए।

पुराणों के संयुक्त स्वरूप वाला उपन्यास 'पथरीला सोना' लिखने के बाद धुरंधर जी निश्चित रूप से शारीरिक व मानसिक थकान महसूस करने लगे थे। इसीलिए उन्होंने कुछ दिनों के लिए अपना ध्यान कहानी अथवा लघुकथा जैसी स्वरूप में छोटी साहित्यिक विधाओं लेखन, प्रकाशन व उनके संग्रहण पर केन्द्रित कर लिया। यह बात उन्होंने स्वयं अपने कहानी संग्रह 'अंतर्मन' के पुरोवाक् में स्वीकार की है लेकिन इसका यह मतलब कदापि नहीं समझना चाहिए कि उनका सर्वथा के लिए उपन्यास से मोहभंग हो गया था। वस्तुतः वो आज भी नवीन, उपादेय और अनबूझे अनसुलझे कथानक की वैचारिक तलाश में रहते हैं, इसी तलाश की कड़ी का प्रतिफलन है उनका एक और उपन्यास 'विराट गली के बासिंदे', जिसका प्रथम संस्करण सन् 2014 ई. में 'आधारशिला प्रकाशन' नैनीताल से प्रकाशित हुआ। इसके पूर्व प्रकाशित धुरंधर जी के उपन्यासों की कथावस्तु में ज्यादातर मॉरीशस के इतिहास को केन्द्र में रखा गया है जिसके चारों और मॉरिशस की आजादी के पूर्व एवं बाद का इतिहास, उपनिवेशवादी शासन व्यवस्था, जमीदारी प्रथा, प्रवासी भारतीयों की समस्याएँ, मॉरिशस की बदलती सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और धार्मिक मनःस्थितियाँ, पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण तथा कुछ हद तक वर्तमान सामाजिक विसंगतियाँ चक्कर लगाती सी नजर आती हैं। लेकिन 'विराट गली के बासिंदे' परम्परा से हटकर एक ऐसा व्यंग्यात्मक

उपन्यास हैं, जो पूर्णत: वर्तमान राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था पर कटाक्ष करता है। यह उपन्यास केवल विषमताओं का प्रत्यक्षदर्शी ही नहीं बनता अपितु उसे देखकर एक कुटिल मुस्कान के साथ यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि आजादी के इतने सालों बाद भी वास्तव में क्या बदला है? आजादी आखिर मिली किससे है? या वास्तव में आजादी की आवश्यकता किससे एवं किसे है? मनोविश्लेषणात्मक विवेचना के द्वारा व्यंग्य का सहारा लेकर अनेक अंतर्द्वन्द्वों में अटकता हुआ उपन्यास का कथानक विसंगति पर व्यंग्य से शुरू होकर विसंगति पर व्यंग्य पर ही समाप्त हो जाता है। यद्यपि उपन्यास का कथानक समस्या का कोई समाधान प्रस्तुत नहीं करता फिर भी इतना तो अवश्य ही निर्देशित कर देता है कि मानवीय अदूरदर्शिता ने ही उसे पाश्विकता के समीप लाकर खड़ा कर दिया है और भूत की अपेक्षा वर्तमान अधिक संवेदनाविहीन हो गया है और यदि भविष्य को स्वर्णिम बनाना है तो भूत से प्रेरणा लेकर वर्तमान को संतुलित करना अतिआवश्यक है।

उपन्यास के कथानक का प्रारम्भ 'टोटका-टोटकी' नामक एक गाँव से होता है और यही गाँव प्रारम्भ से अंत तक कथानक के केन्द्र में बना रहता है, और सम्पूर्ण उपन्यास इसी गाँव का चक्कर लगाता सा प्रतीत होता है। नाम से ही आडम्बर बहुलता का बोध कराने वाला यह गाँव वास्तव में विविधताओं से परिपूर्ण है। धर्म, संस्कृति, राजनीति, परम्पराएँ आदि सभी की विविधता आसानी से इस गाँव में देखी जा सकती हैं। उपन्यास का प्रमुख पात्र बासू चिरैया उर्फ शिवगणेश इसी गाँव का सुविख्यात नाई है। बासू की सैलून की दुकान ही वह चमत्कारिक स्थान है, जहाँ बैठकर सम्पूर्ण मॉरीशस की राजनीतिक, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियों पर चर्चा परिचर्चा की जा सकती है। वैसे तो शुरू में यहाँ आने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने बालों के भार से मुक्त होने के लिए ही आता था, लेकिन धीरे-धीरे आगमन के उद्देश्य का दायरा बढ़ता गया। लोग अफवाह बनाने व अफवाह सुनने से लेकर धर्म और राजनीति जैसे जटिल विषयों को भी विचार-विमर्श की सीमा तक ले जाने लगे, भले ही उनका विचार-विमर्श मात्र आरोपों-प्रत्यारोपों तक ही क्यों न सीमित हो। इसका परिणाम यह हुआ कि बासू न चाहते हुए भी ऐसी परिस्थितियों का सामना करता रहा जिसके सृजन का जिम्मेदार वह नहीं, बल्कि कोई और था। वैसे तो उपन्यास में सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक सभी प्रकार की विषमताओं पर समान रूप से प्रहार किया गया है। लेकिन राजनीतिक व्यंग्य का उभार अधिक दिखाई देता है। सामाजिक विषमताओं में यदि अज्ञानता,

अशिक्षा, गरीबी, यौनाचार, शराबखोरी व अंधविश्वास आदि। केन्द्र में है तो धर्मांतरण, हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्यता, पूजा-पाठ, कीर्तन-भजन आदि के माध्यम से स्त्रियों का शोषण, अनैतिकता व राजनीति की सह में धार्मिक अनाचार आदि धार्मिक आडम्बरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस उपन्यास में मॉरिशस की वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था पर सर्वाधिक व्यंग्य किया गया है। जिसमें जमीदारी प्रथा, शासन की अदूरदर्शिता, सत्ता की लोलुपता, चुनाव, भ्रष्ट नौकरशाही व्यवस्था, न्यायपालिका की संकीर्णता, राजनीतिक पैंतरेबाजी, मंत्रियों की दल-बदल प्रणाली, देश पर विदेशी कर्ज और उस कर्ज का व्यक्तिगत उपयोग आदि पर करारा व्यंग्य किया गया है। एक भूतपूर्व मन्त्री की दाढ़ी बना देने के कारण वर्तमान सरकार के तीन मंत्री चेकोले, दुलतिया और खतारू बासू नाई का जीना हराम कर देते हैं और यह सिद्ध हो जाने पर भी कि उसका किसी भी दल के किसी नेता से कोई संबंध नहीं है, अपने व्यक्तिगत स्वार्थों की सिद्धि हेतु उसे परेशान करते रहते हैं। इसी तरह फतिंगा यदि पूँजीवादी व्यवस्था का प्रतीक है तो बेलछन दुखिरा द्वारा पुराने अखबार में पढ़कर 'सरकार का पतन' 'और 'पुनः चुनाव' की अफवाह फैलाना उसकी अशिक्षा और अज्ञानता का बोध कराने के लिए पर्याप्त उदाहरण है। बेलछन दुखिरा द्वारा फैलायी गयी अफवाह भले ही अफवाह ही हो और अज्ञानतावश पूर्व घटना को वर्तमान में घटित हुआ मान लिया गया हो लेकिन विचारात्मक बात यह है कि उस अफवाह को कुछ लोगों ने क्षणभर के लिए ही सही-सत्य मान लिया था, इसलिए यह अज्ञानता अकेले बेलछन दुखिरा की ही नहीं रह जाती। इसी तरह बासू की सैलून की दुकान से उठी अफवाह का जिम्मेदार स्वयं बासु को मान लिया जाता है तथा उस पर सरकार को गिराने का प्रयास उसका अन्य राजनीतिक दलों के साथ संबंध तथा देशद्रोह जैसा गम्भीर आरोप थोप दिया जाता है। यही मॉरीशस की राजनीति का यथार्थ है और इसी यथार्थ का शिकार बासू चिरैया जैसी भोली-भाली जनता। उपन्यास का सम्पूर्ण कथानक ही इसी प्रकार की अनेक स्थूल और सूक्ष्म विसंगतियों पर व्यंग्य से भरा पड़ा है।

'पथरीला सोना 'उपन्यास के प्रथम खण्ड में जेल दौरान अपने बड़े साहब से टकराते हुए अपना मनोबल मजबूत करता है। इंस्पेकर की तरफ से भी उनकी प्रशंसा की जाती है। उनकी बातों में दम होने से लोग उनसे कहने लगे थे कि कँवल का सम्मान करने के लिए वे जो सुझाव दें एक मत होकर स्वीकारा जाएगा।यह तो अपना उत्सव था। लोग रात को देर तक रास्तों पर झूमते गाते बजाते रहते थे। किसे पता था कि ऐसा

इस संदर्भ में मुनुकलाल ये गाना गाएगा। उन्होंने गाया -

"देख हो जर गइल दुश्मन के करेजवा

हम आज गावी हो खुसी के गितवा

उधर जरी करेजवा त भैया जरे दे

हमर करेजवा झुमत बानी त झूमे दे।" 16

यह चुनकर लोग आश्चर्यचकित हो गए ,यह समझ में नहीं आ रहा था कि यह कोई प्रसिद्ध गीत था या मुनुकलाल ने मौके के लिए खुद बनाया और खुद गाया | पुलिस के सामने भी न डरकर गीत गाते थे। यही बताता है कि यह कोई भारतीय संस्कृति का प्रसिद्ध बिरहा है। यह गीत इस उपन्यास में कई स्थानों पर सुख-दुःख, आशा-निराशा सबको अपने भाषाई स्वरूप में प्रकट किया गया है। उत्सव के समय भी लोग यह लोकगीत गाते हैं।

लोकगीतों के माध्यम से कथा-प्रवाह को एक सहज ऊँचाई भी उपलब्ध कराई गई है |फ्रांसीसी गोरों के खेतों में आग लग जाती है तब भारतीय लोग इस तरह आनन्द मनाते हैं - "जर जाय हो मानेस के रजवा बड़का सहेववा के लंका मोर भयवा जहाँ जरावे राम रावण के लंकवा इहाँ जराय हो करेजा के अगवा ।' 17

लेखक श्री रामदेव धुरंधरजी मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के जाने-पहचाने हस्ताक्षर है | लेखक की मातृभाषा भोजपुरी है | उनका सारा लेखन हिंदी में है | लघुकथाओं की रचना तथा उपन्यास विधा पर उन्होंने कुशलतापूर्वक कलम चलाई है | उन्होंने गुलाम मॉरीशस तथा 1968 में स्वतंत्र मॉरीशस के युग को जिया है | 'चेहरे मेरे तुम्हारे ' पुस्तक की भूमिका में उन्होंने लिखा है -"मॉरीशस में रहकर पुस्तकें प्रकाशित करवाना मेरे लिए सहज नहीं है। असहजता से गुजरकर जैसे-तैसे हम हिंदी से जुड़े हैं और कुछ न कुछ लिख रहें हैं। अनुरोध है, हमारे हिंदी-प्रेम को पहले देखिए और हमारी हिंदी लेखन प्रतिक्रिया को पहले तोलिए। तब हमारी खामियों में भी आपको हमारी साहित्यिक भावना अच्छी लगेगी। " 18

गिरमिटिया मजदूरों को मॉरीशस ले जाने पर गुलामों से भी बदतर जीवन जीने के लिए मज़बूर होना पड़ा था था| ये गिरमिटिया अपने साथ अपनी भाषा, अपनी संस्कृति , अपनी लोकपरंपराओं को अपने साथ ले गये थे | डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल लिखते हैं -" लोक का जितना जीवन है उतना ही लोकवार्ता का विस्तार है , लोक में बसनेवाले जन ,जन की भूमि और भौतिक जीवन तथा तीसरे स्थान में उस जन की संस्कृति -इन तीनों क्षेत्रों में लोक के पूरे ज्ञान का आ- विभावि होता है और लोकवार्ता का संबंध भी उन्हीं के साथ होता है।"' 19

उपन्यास के चौथे तथा छट्ठे खण्ड में भोजपुरी का प्रभाव तो है है किन्तु उपयोग बहुत कम किया गया है। इससे स्पष्ट होता है कि जैसे-जैसे देश में स्वतंत्रता के बाद शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने लगा , भोजपुरी उपेक्षित होने लगी और धीरे-धीरे देश की मातृभाषा क्रियोल बन गई। आज भोजपुरी पुरानी पीढ़ी की बोलचाल में है लेकिन गीतों का प्रचार अधिक है जिस तरह-"तोहर से लोतो नहीं मांगब एक गो फटफटिया कीन देन हमर जान | " ठाकुर कहता है -" लोग मुझे इस तरह आँखों निहारकर देखें मुझे अच्छा नहीं लगता , समझो करेजवा में छक से तीर छूकसे उस पार निकल जाते हैं, शुक्र है मेरी जेठानी को दवा आती है। मिर्च से औंछ कर बीमारी को रफूचक्कर कर देगी।'20

इस उपन्यास में लेखक ने परंपराओं का भी चित्रण किया है। जो आज भारतीय समाज में जीवित है। -"आरती उतारों जी बार ब्याहन आयो | कन्या दान ,बिदाई पर माँ-बाप का रुदन , विवाह -मंडप में शादी पूरी हो जाने के बाद सभी खीर खवाई विधि को पूरा करने में लगे। " 21

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने जिन परंपराओं और रीति-रिवाजों को दिखाया है वे आज भी समाज में देखने को मिलता है। आज भी लड़के या लड़की की हल्दी पर 'हरदी गीत 'गाए जाते हैं। आज भी हल्दी के पूर्व गीत गवाई होती है। हाँ आज 'चौधरी ' का रूप आधुनिक 'रिसेशप्न' ने ले लिया है जिसमें 'पीना' भी चलता है तथा मांसाहारी भोजन भी। 'हल्दी' विधि के समय आज भी मॉरीशस में शाकाहारी भोजन ही परोसा जाता है। सात तरह की सब्जियाँ, पूरी आदि पत्ते पर ही मेहमान खाते हैं।

विवाह के अवसर पर अश्लील तथ्य भी रखे जाते थे- " बजरंगी तुम्हारे बोलने से मैंने नंगा नाच नचाने के लिए लहँगा झाड़ा था और तुम तो सुनते ही खुशी के मारे धोती

झटकारने लगे थे। अब यही कहती हूँ कि नाचने के लिए निकल ही गए तो मान मरजाद को पाँव पोंछने कपड़ा समझकर फेंको।' 22

एक दूसरा उदाहरण -" गोरों के आने से पहले पूरी सज धज और धूम धड़ाके से हल्दी विधि पूरी हो जाए | गोरें आएं तो धरम मरजाद के नाम पर कौआ तक ना बोले , बस नाच की गुटुर गूं सुनाई दे |" 23

इस तरह ठाकुर ने भी हल्दी पर एक नृत्य रखवाया था उनका वर्णन इस प्रकार है -

" ठाकुरी ने हल्दी पर अश्लील नृत्य रखवाया ,

मार झटके पे खूब झटका ,

हिला दे अपन छाती, मटका दे फूलल पिछवाती।'24

'पथरीला सोना 'उपन्यास के पाँचवें खण्ड में मारीच देश का ननक अपना सौभाग्य समझता है कि उसके साथ ऐसा कोई दुर्योग नहीं हुआ था। बंदरगाह में तय हो गया था कि उसे अपनी पत्नी को लेकर किसी फ्रांसीसी गोरे के ईख प्रतिष्ठान के लिए जाना है। जहाज में आए हुए बहुत से लोग उसके साथ थे। पत्नी उसके साथ न होकर औरतों के बीच में अपने लिए जगह बनाकर चली जा रही थी। ननक के लिए यह ठीक ही था। उसे लगता था पत्नी से बातें करने में उसे तो युगों अपने को तैयार करना पड़ेगा। आपस में यहाँ कि अपरिचित मिट्टी से लेकर सुख-दुःख की बातें हो रही थी | यहीं पता चले अपने साथ चलनेवाला एक बिहारी तो बड़ा गायक था। चलते-चलते उसने एक गीत बना लिया था और गाता चल रहा था। वह गीत इस प्रकार का था -" अब तो परभु से रही इही बारंबार हमर पुकार जब तलक रही परान मिले ई जब तलक रही परान मिले देसवा के दुलार मारीच देसवा के माटी में मिल जाय ई काया पीछे छूट गईल भारत हो अब कौन -मोह माया भारत देसवा में जनम होलत मरनी हिंया होई

हो सके ला हो इही कोनो जनम करनी होई।"25

इस गीत में ननक अपने मारीच देश का महत्व बताता है, भारत देश की अपनी दुल्हन को स्वीकार करता है |

महुआ पेड़ के पास आने पर केदार को लोरी धीमी करनी पड़ी | इस व्यवधान के

लिए वह तैयार नहीं था। किन्तु परिस्थिति ऐसी जान पड़ी तो हो भी क्या सकता था। बीच रास्ते में दो पिल्ले खेल रहे थे। केदार ने जोर से भोंपू बजाया और सिर बाहर निकाल कर पिल्लों को भगाने के लिए आवाज़ लगाई | लेकिन पिल्ले तो हटे नहीं | महुआ पेड़ के नीचे दयाला सो रहा था। आवाज़ सुनने पर वह हड़बड़ाकर जागा और चारों ओर देखने लगा। लोरी में केदार दंपति को देखकर उसने दोनों को जोरदार नमस्कार भेजा। केदार ने हाथ हिलाकर नमस्कार का स्वीकार करना पड़ा | केदार लोरी में अकेला होता तो या तो दयाला झटपट उसके पास आकर पैसा मांगता या वहीं से जोर-जोर से बातें कर रहा था। आश्चर्य नहीं वह अपना एकाकी रटा -रटाया गीत गाने लगा -" हम त खेलब होली के रंगवा मन चाहे तू रंगवा में तनिक मोर साथ न देयबू इत होली ह खेले ओला मिल जाय । जिंदगी में कुछ नई खे रंग खेल ले बारंबार।" 26 खेल संबंधी गीत की यहाँ व्याख्या की गई है।

'पथरीला सोन' उपन्यास के चौथे खण्ड में लोक कथा में धार्मिक भावना का चित्रण किया गया है। कान गोजर के हाथ का बस्ता छूट गया था। झुक झुके तो कभी जमीन पर घुटनों पर चलते हुए बिखरे हुए सारे कागजों को उठा कर अपने बस्ते में भर लिया था। मंजरी के न रहने पर वह सरकार को ये ही कागज़ दिखा कर इस जमीन का मालिक बनता।

कनगोजर यहाँ एकत्रित लोगों, पुलिस और मरने वाली मंजरी से आँखें हटा कर यहाँ से जाता कि उस के अंत ने उस के सिर पर चढ़ कर बोला था यही तुम्हारे जीवन का अंतिम पाप है। अब चलो !

कनगोजर के हाथ का बस्ता छूट गया था और सारे कागज़ उड़ने लगे थे। वह घायल मूर्गी की तरह छटपटा रहा था। वह कभी इस आदमी में गिरता था कभी उस में लुढकता था। वह मिरगी का रोगी होने से लोग उस की छुअन से अपने को बचा रहे थे। उसने जैसे -तैसे मंजरी से कहा था चिता बनावल बस कर माई | हम जात हँईं। हमर झूठ खातिर माफ़ कर ।

उसके गिरने पर पुलिस उसे उठा कर जीप में ले गई थी। थोड़ी देर बाद सूचना आई थी वह रास्ते में ही मर गया। यहाँ मंजरी की चिता अधूरी थी। किसी ने कहा था भगवान के घर देर ह, अंधेर नई।

इस के बाद लोग अपने अपने रास्ते चले गए थे। मंजरी को कहीं जाना नहीं था। उस का घर तो यहीं था। वह अपने घर में बहुत खुश थी। वह अपनी आत्मा से जानती थी मरने का उसे क्षोभ न होता । कलंक उस के लिए सब कुछ था । उसे कलंक से बचाने वाला कौन हुआ? मिरगी का रोगी कनगोजर चुपचाप गिर कर मर सकता था। किस ने उस से कहलवाया था। इस घटना के दो दिन बाद यहाँ एक नाटक मंडली आई थी। यह नाटक मंडली पूरे देश में धार्मिक नाटक प्रदर्शित करती थी। मंडली का नाम था - दुर्गेश नंदिनी। इस गाँव में कृष्ण पर आधारित नाटक खेला जाने वाला था। नाटक का नाम था कृष्ण लीला। इस का बहुत पहले से यहाँ होता आया था। नाटक गाँव के खेल मैदान में होने वाला था। नाटक का मैनेजर एक दिन यहाँ आया था। उस ने दो चार लोगों से मिल कर यहाँ नाटक खेलने की बात तय की थी। इस के लिए व्यक्तिगत टिकट लगने वाला नहीं था। नाटक के दिन एक पेटियों रखी होतीं। लोग कुछ पैसे डाल देते और नाटक देखने के लिए आ बैठते नाटक के दिन दो सुबह मैनेजर अपने कर्मचारियों के साथ आ कर पर्दे लगाने से ले कर दूसरे तमाम कामों में लगा रहा था। इन के प्रति लोगों के अंतस में सम्मान की भावना थी। ये लोग अपनी ही तरह वेष भूषा वाले प्राणी होते थे। पर जब नाटक के पात्र बनते थे तब साक्षात हनुमान राम कृष्ण राधा अहिल्या होते थे।

भीड़ भाड़ से दूर रहने वाली मंजरी नाटक देखने गई थी। कृष्ण उसके गाँव आने वाला जो था। उस ने कृष्ण को मंदिर में देखा तो था । पर कृष्ण चलता नहीं था। हाथ में बाँसुरी लिये चुपचाप खड़ा रहता था। मंजरी से कहा गया था नाटक में आने वाला कृष्ण सब की तरह चलता है। भीड़ सकेत में पड़ा हुआ आदमी कितनी भी दूर से आवाज़ दे कृष्ण सहायता के लिए पल भर में चल कर आ जाता है। मंजरी का भी दिमाग काम करता तो था। बात उस की समझ में आती थी। कृष्ण पहाड़ उठा लेता था। यह चलने वाला कृष्ण भगवान ही तो कर सकता था।

वक्त आने पर मीरा के गायन से नाटक का शुभारंभ हुआ था। मीरा वसंती रंग की साड़ी में थी। वह एकतारा बजाती थी। -

" पग घूँघरू बांध मीरा नाची रे ।

मैं तो मेरे नारायण की आपहि हो गई दासी रे।

लोग कहे मीरा भई बावरी न्यात कहे कुलनासी रे।।

विष का प्याला राणा जी भेज्यो पीवत मीरा हाँसी रे।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर सहज मिले अविनासी से।। " 27

मीरा गायन के बाद नाटक शुरू हुआ था। नाटक नृत्य पर आधारित था। विषय था उद्धव गोपिका संवाद। नाटककार ने इस में एक प्रयोग किया था। सूत्रधार ने नाटक शुरू होने से पहले दर्शकों से कह दिया था नाटक में जो दिखाया जाएगा वह इतिहास से न हो कर लेखक की अपनी कल्पना से है। कृष्ण मथुरा से उद्धव के साथ गोकुल आया था। वहीं गोपिकाओं से संवाद करता था और उद्धव एक किनारे में खड़ा था। पूरे दृश्य को गोपिकाओं के स्वप्न में खड़ा किया गया था। थोड़ी थोड़ी देर में एक एक गोपिका नींद से जाग कर कृष्ण से निवेदनपूर्वक कहती थी -" आए हो तो अब से जाना नहीं हम सबके कान्हा।"' 28

बिपत आर्मी में युद्ध करते समय पकड़ा जाता है। अंग्रेज सरकार ने कमिटी लगाकर कहा था उसे दुश्मनों के यहाँ से छुड़ाने के लिए पूरे इंग्लेंड को दाव पर लगा देगी | उसे छुड़ाने में जितना वक्त लगता था उसी अनुपात से दूसरा विश्व युद्ध भी बढ़ता जाता था। पाँच अंग्रेज जान पर खेलकर उसे छुड़ाने आए थे | रात को वह छूटा और सुबह होने पर कहा गया बिपत नाम का उनका आर्मी उन्हें वापस मिल गया इसलिए युद्ध को यहीं खत्म करते है।

पर रिवाल्वर और बड़बोलेपन के आतंक से शासन करनेवाले बिपत के दिन ढले। उसकी इज्जत गिरते जाने का मुख्य कारण यह था कि वह एक पाँव का आदमी था। उसके बच्चे उसे सुनते नहीं थे। उसके लौटने पर बहूटी ने आठ वर्ष में छः बच्चों को जन्म दिया था। पहले के दो बच्चों को लेकर छोटे-बड़े मिलकर उसके घर में दस प्राणी हुए थे। बहूटी कमानेवाली अकेली थी। बिपत घर में नकारा हुआ तो बाहर में उसका हाल बहुत खराब था | उसकी रिवाल्वर उसके हाथ में बस झूलती थी गोली उगलती नहीं थी। लंगड़े को लंगड़ा मानकर किसी ने कह दिया उसकी रिवाल्वर नकली है , वह जितना पैसा लाया था सब चले गये | वह लोगों को अपनी वीरता की बात सुनाने के लिए पैसा देता था | इस बात से बहूटी नाराज थी | इस बात को लेकर दोनों में लड़ाई हो जाती है ,वह उनको पीटता है | मार पूरी हो जाने पर बहूटी अपने आँगन में बैठकर रो रही थी | रोते -रोते वह गा रही थी -" जियरा जरे लात बोली ला ए लंगड़ों दुखवा देवे लेत इही हम पूछी ला आर्मी के घर में आ गई ली ऊ गईल परदेस हम हिंयाँ छूट ली एक

जनम में सात जनम मरली जियरा जरे ला त बोली ला ए लंगड़ों।" 29

लोगों ने मार और चीख की आवाज़ सुनी थी। अब मार के बाद गीत सुन रहे थे। बिपत ने पत्नी को घर में मारकर उसे दोनों हाथों में उठाकर बाहर फेंक दिया। वह बाहर नहीं निकल रहा था और बहूटी थी कि गाते-गाते उसे बाहर निकल ने के लिए चुनौती दे रही थी। लेकिन बहूटी उसे मारती नहीं है।| इस प्रकार यहाँ भारतीय स्त्री की संस्कृति की व्याख्या की गई है।

मॉरीशस में भारतीय किसान के गीत को मैंने यहाँ चित्रित किया है -" गाऊँ मैं तो पुरखन के गीत हो एक वही मेरा सच्चा मीत हो |भारत छूट गईल मोर भैया हो कब अँखियाँ देखी गंगा मैया हो। " 30

दिवाकर ने अपने खेत में किसान के मुँह से यह गीत कई बार सुना था , वह उसको निकाल देना चाहता था, फिर वह उसे वापिस बुलाता है | उसने माना था वह गानेवाला पीतांबर नहीं हो सकता था | यह भी इसलिए हुआ कि खेत न आने से वह इस संस्कृति में ढलने से बहुत दूर छूट जाता हो |

उपन्यास का शीर्षक 'विराट गली के बासिंदे ' भी एक व्यंगात्मक शीर्षक है। यदि सरल शब्दों में कहा जाए तो नामकरण का अर्थ होगा 'महान गली के निवासी या महान गाँव के निवासी'। 'टोटका-टोटकी' गाँव की वह नई बनी हुई गली, जिसमें फटिंगा की नव्यनिर्मित बहुमंजिला इमारत है और इसी इमारत बासू नाई की दुकान भी है। यह गली अपने में विविधता में भी एकता लिए है। सम्पूर्ण गाँव को तो नहीं कह सकते लेकिन बासू नाई की यह गली मारीशस का ऐसा स्थान है, जहाँ अशिक्षा, अज्ञानता, गरीबी, धार्मिक आडम्बर, सामाजिक विकृतियाँ व राजनीतिक शोषण आदि सभी कुछ वर्तमान है। इस छोटी सी गली में पायी जाने वाली विविधता केवल मॉरीशस ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण भूमण्डल का प्रतिनिधित्व करती है। इस गली में यदि अफवाह बनती है तो यही बैठकर देश की वर्तमान राजनीति पर बहस भी होती है। इस गली के लोगों का नामकरण यदि हास्य प्रकट करता है तो उस नामकरण के पीछे छिपी कहानी किसी न किसी विसंगति पर प्रहार अवश्य करती है। फटिंगा यदि जमीदारी व्यवस्था से उत्पन्न पूँजीवादी कीड़ा है तो चेकोले, दुलतिया और खटारू राजनीति रूपी कीचड़ में उत्पन्न तथा उसी में पलने-बढ़ने वाले कीड़े, जो व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए साम, दाम,

दण्ड, भेद आदि जैसी पद्धतियों को अपनाने में भी नहीं हिचकिचाते। उपर्युक्त कारणों से गली की महानता स्वतः सिद्ध हो जाती है। भले ही वह महानता पूर्णता- अपूर्णता, एकता - अनेकता, शिक्षा-अशिक्षा, धर्म-अधर्म, राजनीति-सेवानीति आदि के संगम से ही क्यों न हो। केवल गली ही नहीं उस गली निवासी भी अद्भुत और दैवीय गुणों से परिपूर्ण हैं, इसलिए महानता गली और गली के निवासियों दोनों में है इसमें संदेह नहीं होना चाहिए। सम्भवत: इसी को ध्यान में रखते हुए उपन्यासकार ने उपन्यास का नाम 'विराट गली के बासिंदे' रखना ज्यादा उचित समझा हो। शब्द चमत्कार लाने के लिए यदि 'महान' को 'विराट' और 'निवासियों' को 'बासिंदे' कह दिया जाय, तो इसमें अतिशयोक्ति नहीं होगी। कारण जो भी रहा हो लेकिन शैली की व्यंग्यात्मकता और कथा वस्तु की वैचारिकता की दृष्टि से उपन्यास का यह नाम सर्वथा अनुकूल ही है।

संक्षेप में यही कहना अधिक समुचित होगा कि -"जिस प्रकार अभिमन्यु अनंत ने 'लाल पसीना', 'गाँधी जी बोले थे' व 'पर पगडण्डी नहीं मरती' जैसे उपन्यासों में कल्पना सृजित पात्रों द्वारा मॉरीशस के इतिहास को सजीव किया उसी प्रकार धुरंधर जी ने भी अति श्रम साध्य औपन्यासिक रचनाएँ प्रस्तुत कर हिन्दी साहित्य में कीर्तिमान स्थापित किया है जिससे आगे निकल पाना किसी अन्य साहित्यकार के लिए दुष्कर होगा। " 31

'ढलते सूरज की रोशनी' उनकी ऐसी ही रचना है, जिसे एक नया उपन्यास प्रयोग कहा जा सकता है। प्रस्तुत उपन्यास में मुख्य चरित्र ही रचनाकार से बगावत कर उठता है। उसकी इस बगावत के साथ ही रचना का पलड़ा भी फिर उसी की ओर झुक जाता है। इस मर्जी को आकार देने में उसके भीतर के पुरुष की मस्ती अहम रोल अदा करती है। वास्तव में यह चरित्र है, एक आईना जिसमें हम मॉरीशस के समकालीन समाज का बिम्ब देख सकते हैं।

रामदेव धुरंधर की विशेषता यह है कि इस चरित्र विशेष के सहारे वह उस बड़े जाल का पर्दाफाश करते हैं जो अपने निजी स्वार्थों के लिए पूरे एक देश को भी खोखला कर डालने से भी नहीं हिचकता। इस उपन्यास के कथारस के प्रवाह में सम्भ्रान्त नज़र आने वाले लोगों की असल छवि तो प्रस्तुत होती ही है, पाठकीय विवेक भी खूब जागृत होता है।

इस उपन्यास में कथा के अनेक मोड़ हैं, जिनमें एक सम्भ्रान्त चरित्र अपनी ही हरकतों से अपनी ही नज़र में गिर जाता है। उसकी हताशा ऐसे में उसे कर्णिका जैसे चरित्र से

भी छोटा कर देती है। कर्णिका जो अपनी मर्जी से अपना जिस्म बेचकर अपना दुख भुलाने पर विवश है। राजनीतिक हथकंडे ही नहीं, अवैध व्यापार की मूल्यहीनता कथा का एक ऐसा संजाल बुनती है कि पाठक कथा के आकर्षण में आ फंसे यहाँ जीवन की थीसिस भी है, एंटीथीसिस भी और सिंथेसिस भी। इस रचना- समय में यह उपन्यास एक उपलब्धि ही है, क्योंकि इस कथा में भारत भी है और मॉरिशस भी ।

मॉरीशस का प्रबोध मुंबई की फिल्मी गाथा कुछ-कुछ जानने और खेदन के बताने जैसी दोनों स्थितियों को मिलाकर कर्णिका के प्रति अपने को मानो दया की सजीव मूरत में ढालने लगा था। सार तत्व था , कर्णिका को जानने में उसका ज्ञान इतना समृद्ध हो गया है कि शराब के घूंट अपने हलक में उतारने की प्रक्रिया में वह सबसे कह सकता है एक मैं ही कर्णिका का दुःख समझ सकता हूँ। अब दोनों के बीच जिस तरह की बातें हो रही थी , खेदन ने उसी के हिसाब से कहा था -"खूब सुन्दर है ,लेकिन अपने दुःख से चेहरा उतरा होने के कारण कुछ स्याह हो गई है।" 32 इस प्रकार यहाँ भारतीय और मॉरीशस की संस्कृति का समन्वय किया गया है।

आनी फ्रांस में से प्रबोध से बताती है -"यह मेरे जीवन की कहानी है। मैं जानती हूँ , मुझे मुम्बई में न पाने पर मुझे फोन करने के साथ मेरी खोज में निकल सकते हो | इसी बात पर मेरी मानवता में आया, तुम्हें बता दूँ , इस वक्त मैं कहाँ हूँ | एक औरत ने मुझे मुम्बई से निकालकर फ्रांस भेजने के लिए बहुत कुछ किया | वह औरत मेरी सहायक न बनती तो मैं मुम्बई में मिट जाती।"33 यहाँ भी भारतीय संस्कृति की विशेषता बताने का प्रयास लेखक ने किया है।

निष्कर्ष :-

75 वर्षीय रामदेवधुरंधर भारतेत्तर हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण लेखक है | उपन्यास ,कहानी , व्यंग्य ,नाटक और लघुकथा जैसी विधाओं में उनकी सृजनात्मक प्रवृत्ति उल्लेखनीय हैं। वर्तमान समय में मॉरीशस के सबसे बड़े साहित्यकार के रूप में प्रतिष्ठित है। वे बिना किसी विवाद में पड़े अविरत लेखन कार्य करते रहे और सभी भारतेत्तर साहित्यकारों में प्रसिद्ध हो गए। मॉरीशस के हिंदी लेखकों का भारत के प्रति एक विशेष निष्ठा का भाव दृष्टिगोचर होता है। एक समय था जब तथाकथित प्रवासी साहित्य का अर्थ होता था अभिमन्यु अनत , लेकिन समय के साथ-साथ रामदेवधुरंधर

ने अपनी सशक्त लेखनी के द्वारा हिंदी साहित्य की मुख्य धारा में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है |

मॉरीशस की संस्कृति , भाषा , रहन-सहन एवं संघर्षों को वहाँ के हिंदी साहित्य में देखा जाता है। इसी परंपरा में चर्चित कथाकार श्री रामदेवधुरंधर के उपन्यासों में यह देखा जाता है। इन सभी में प्रवासी पीड़ा को बहुत गहराई के साथ चित्रित किया गया है। मॉरीशस पहुँचने पर गिरमिटिया लोगों के सामने भारतीय अस्मिता का प्रश्न संघर्ष ,गंतव्य स्थानों की विविधता और वहाँ की संस्कृति इत्यादि को इन उपन्यासों में अंकित किया गया है |

इस अध्याय में मैंने 'पूछो इस माटी से ' , पथरीला सोना ' उपन्यास में चित्रित रहन -सहन , पोशाक , धार्मिक त्यौहार , बाल पर्व , विवाह , लोकगीतों में संस्कृति , लोककथाओं में संस्कृति इत्यादि का विश्लेषण किया है | 'विराट गली के बासिन्दे ', ' ढलते सूरज की रोशनी ' उपन्यास पर भी प्रकाश डाला गया है |

संदर्भ-सूची :-

1. Moritius wiki pedia www.google.com

2. मॉरीशस का कथा साहित्य -भारतीय संस्कृति का वाहक .डॉ. संध्या गर्ग ,पृ-484

3. पूछो इस माटी से -रामदेवधुरंधर -पृ-417

4. वही . पृ-312

5. वही .पृ.203

6. वही . पृ.313

7. वही . 316

8. वही .पृ.212

9. वही . 288

10. वही .

11. वही.पृ.329

12. वही .पृ-121

13. पूरो वाक -रामदेवधुरंधर -पृ.9

14. पथरीला सोना -दूसरा खण्ड .पृ.8

15. फेसबुक साक्षात्कार एवं पथरीला सोना (पाँचवां खण्ड एक भावभीनी शुभकामना) रामदेव धुरंधर

16. पथरीला सोना .प्रथम खण्ड -रामदेवधुरंधर -पृ.362 -363

17. वही

18. 'चेहरे मेरे तुम्हारे ' -रामदेवधुरंधर .भूमिका से .1998

19. पृथ्वीपुत्र -डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल .पृ.75

20. पथरीला सोना ,खण्ड 3 .रामदेवधुरंधर .पृ-21 21 . वही .पृ-220

22. वही .भाग 2 .पृ-21

23. वही .भाग 3 -पृ.46

24 . वही भाग 4 .पृ.49

25. वही .खण्ड 5 .पृ.149

26. वही .पृ. 269

27. वही .खण्ड 4 .पृ.270-271

28. वही

29. वही .पृ.333

30. वही . पृ .373

31. मॉरीशस का हिंदी साहित्य .एक समृद्ध परंपरा .डॉ. सतीष अग्रवाल .पृ.115

32. ढलते सूरज की रोशनी .रामदेवधुरंधर .पृ.11

33. वही .पृ.135